विवाह संस्कार व रीति रिवाज

मानव जीवन के दो मार्ग है - साधु मार्ग और गृहस्थ मार्ग। साधु का धर्म निवृति मूलक धर्म है। लेकिन गृहस्थ को अपने सभी दायित्वों का निर्वाह करना पड़ता है। गृहस्थ धर्म के निर्वाह के लिए गृहिणी की आवश्यकता होती है और इसलिए विवाह आवश्यक हो जाता है। विवाह एक सामाजिक अनुष्ठान है, यह एक पवित्र संस्कार है जो नैतिक और सामाजिक मर्यादाओं पर आधारित है।

विवाह समारोहों में सम्पन्न समस्त रस्मों का अपना विशिष्ट महत्व होता है किन्तु वर्तमान पीढी इन रस्मों से अनभिज्ञ है अतः कौन सी रस्म कब और किस तरह आयोजित करे यह समस्या आज प्रत्येक परिवार के साथ है। इसी समस्या के समाधान हेतु समस्त रस्मों को क्रमवार प्रस्तुत करने का छोटा सा प्रयास है ताकि विवाह कार्यक्रम आनन्दमयी बन सके।

तिलक मंत्र

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुंद कुंदाद्यो, जैन धर्मोऽस्तु मंगलम्।।

कंकण बांधते समय बोलने का मंत्र

जिनेन्द्र-गुरु-पूजनं, श्रुतवचः मुद्रा धारणं,
स्वशील यम-रक्षणं, ददन-सत्तपो वृंहणम्।
इति प्रथित-षट्क्रिया, निरति चार-मास्तां तवे-त्यथ
प्रथम कर्मणि विहित रक्षिका बन्धनम्।

नोटः- 1. वर के दाहिने हाथ एवं कन्या के बायें हाथ में कंकण बांधना चाहिये।
2. हर मांगलिक कार्य में विनायक यंत्र की स्थापना कर मंगलाष्टक पढ़ नव देव पूजन करनी चाहिये।
3. हर मांगलिक कार्य में वर, कन्या तथा विनायक को पूर्व या उत्तर दिशा में मुँह करके बैठाना ही श्रेष्ठ है।

सगाई

विवाह से पूर्व सगाई की रस्म होती है। समान कुल, वंश, विचार, धर्म, गुण, रूप आदि देखकर वर या कन्या का चयन किया जाता है। फिर अपने कुटुम्बी, इष्टगणों

तथा पंचों के समक्ष सवा रुपया और नारियल से कन्या पक्ष वाले अपनी कन्या देने का वचन देते है जो **सगाई** है।

पहले वर का तिलक किया जाता है। एक चौकी पर वर को बिठा कर घर का बड़ा व्यक्ति रोली से तिलक करके चावल लगाता हैं। माला का जोड़ा पहनाते हैं, पान खिलाते हैं तथा मेवे से गोद भरते हैं जिसमें नारियल व रुपया भी होता है। अपनी शक्ति अनुसार फल, मिठाई देते हैं।

कन्या को चौकी पर बिठाकर तिलक करते हैं और गोद मेवे व नारियल से भरते हैं मिठाई, फल, कपड़े, गहने अपनी शक्ति अनुसार कन्या को देते हैं।

सगाई के पश्चात् दोनों पक्ष वाले बैठकर एक दूसरे की सुविधा का ध्यान रखते हुए विवाह की तिथि तय करके निमंत्रण पत्र छपवाते हैं। समधनें गीत गाती है तथा बन्ना-बन्नी गा कर खुशी का इजहार किया जाता है।

सगाई व्यवस्था हेतु सामग्री

चौकी व उस पर बिछाने का कपड़ा। थाली, चौपड़ा, रोली, चावल व कलश। मिठाई, फल, कपड़े, जेवर इत्यादि। पान का जोड़ा, फूल मालाओं का जोड़ा। एक तौलियाँ। नारियल व सवा रुपया।

निमंत्रण पत्र

निमंत्रण पत्र आपके इष्टजनों व कुटुम्बियों को भेजा गया वह पत्र है जिसमें आप उन्हें विवाह में सम्मिलित हो वर-वधु को आर्शीवाद प्रदान करने का आग्रह करते हैं।

सर्वप्रथम पहला निमंत्रण पत्र जिनदेव के चरणों में मंदिरजी में चढ़ाना चाहिए। तत्पश्चात् जिन्हें भी आमंत्रित करना हो निमंत्रण-पत्र भेज दें।

बत्तीसी न्यौता

कन्या या वर के ननिहाल से मायरा आता है। विवाह के अवसर पर पहनने वाले वस्त्र ननिहाल के होते हैं। वर या कन्या की मां अपने पीहर जाकर बत्तीसी न्योतती है जिसमें 32 बादाम, 32 छिवारें, 32 सुपारी, किशमिश, मिश्री, बताशा, नारियल, गोले, व मिठाई होती है। वे अपने भाईयों व भतीजों को तिलक लगाकर ये चीजे थमाती है और विवाह पर भात लाने का आग्रह करती हैं और बत्तीसी के गीत गाते हैं, बीरे गाते हैं। विवाह के पांच सात दिन पहले भी बत्तीसी न्यौती जाती है।

टीका

लड़की पक्ष वालों के यहाँ से लड़के के कपड़े तथा उसके छोटे भाई-बहनों के कपड़े, जेवर तथा फल, मिठाई तथा नकद रुपया आता है। इस प्रथा को टीका कहते

हैं। उस समय पंचों को जीमनवार या नाश्ता कराया जाता है और मिलनी हुआ करती है। लड़की के भाई-भतीजे अगर टीका के समय में उपस्थित रहते हैं तो लड़के वाला उनको कपड़े तथा नकदी पैसे से विदाई करते हैं।

सिंझारा (चतड़ा चौथ, दीपावली हटरी, सावन की तीज, भादवा की बड़ी तीज और तीज रोट)

सगाई और विवाह के बीच उपरोक्त त्यौहार आते हैं। उस समय लड़का पक्ष से लड़की के लिए कपड़े, फल और मिठाई भेजने का रिवाज है। ब्याह हो जाने के बाद इन त्यौहारों पर लड़की पक्ष वाला अपनी बेटी के लिए उपरोक्त सामान भेजता है।

मोक्ष सप्तमी (मोक्ष साते)

कन्या मोक्ष सप्तमी का उपवास करती है। उस समय सिंझारा के जैसा ही सामान का आदान-प्रदान होता है।

बत्तीसी न्यौता

कन्या या वर के ननिहाल से मायरा आता है। विवाह के अवसर पर पहनने वाले वस्त्र ननिहाल के होते हैं। वर या कन्या की मां अपने पीहर जाकर बत्तीसी न्योतती है जिसमें 32 बादाम, 32 छिवारें, 32 सुपारी, किशमिश, मिश्री, बताशा, नारियल, गोले, तालमखाना व मिठाई होती है। वे अपने भाईयों व भतीजों को तिलक लगाकर ये चीजे थमाती है और विवाह पर भात लाने का आग्रह करती हैं और बत्तीसी के गीत गाते हैं, बीरे गाते हैं। विवाह के पांच सात दिन पहले भी बत्तीसी न्यौती जाती है।

मूँग हाथ लेना

सामग्रीः- साबुत मूंग, हल्दी, धनिया, मेहन्दी, गुड, बताशा, सुपारी, रोली, चावल, मोली आदि।

पहले वर या कन्या को चौकी पर बैठाकर बहन बेटी तिलक करती है और मोली बांधते है फिर परिवार व पडौस की महिलाऐं एक स्थान पर बैठ जाती है। फिर वे मूंग थालियों में डाल कर बीनती हैं। एक महिला दूसरी महिला की थाली में मूंग डालती है। इस प्रकार सात बार किया जाता है यह क्रिया छाजले से भी करते हैं। हल्दी को भी बारी-बारी से कूटते हैं यह हल्दी पीठी के काम में ली जाती है। इन महिलाओं को नेग दिया जाता है। फिर मंगल गीत गाते है। आखिर में सभी को बताशें दिए जाते हैं।

विवाह के अवसर पर पापड़ मंगोड़ी बनाने की भी प्रथा है। यह शुभ शकुन माना जाता है।

लगन (छांटना, पीली चिट्ठी)

लड़की वाले के यहाँ जिस रोज ब्याह हाथ में लेते हैं तथा पीला चावल होता है। उस रोज पंचों के द्वारा एक पत्रिका लड़के वालों के नाम से लिखी जाती है। उसमें पीला चावल तथा रुपया नकद रखकर नाई के द्वारा (आजकल रजिस्ट्री) लड़के वाले के यहाँ जाते हैं। लड़के वाले के यहाँ चिट्ठी पहुंचने के बाद पीला चावल का दस्तूर होता है। पीली चिट्ठी लड़के को तिलक करके उसके हाथ में दे दी जाती है तथा वहाँ के पंच लड़की वाले के पास पीली चिट्ठी का प्रत्युत्तर उसी नाई के मार्फत या रजिस्ट्री से भेजते हैं। नाई, व्यास की उचित विदाई तथा अमल पानी के लिए रुपये देकर की जाती है।

कलश या भाण्डा लाना

विवाह के अवसर पर वर या कन्या का भाई अपनी बहन या बुआ के घर जाता है। बहन या बुआ उसे तिलक करके रुपये देती है और उसके साथ कलश में लड्डू भर कर कलश का लाल कपड़े से मुँह बांध कर अपने पीहर ले जाती है। यहीं से विवाह के रीति रिवाज चालू हो जाते हैं। घर के एक स्थान पर चौकी पर भगवान की तस्वीर रख कर साथिया माण्डकर कलश स्थापित कर देते हैं। और जो लड्डू भांडे में आते हैं उन्हें परिवार में बांटते हैं।

बान या बिन्दोरा जिमान

जिस का विवाह होने जा रहा है वह घर का मुख्य आकर्षण होता है। सभी दुल्हा या दुल्हन बिन्दायक का लाड चाव करते हैं। इसलिए घर की बहन बेटियां उस वर या कन्या को अपने घर आमंत्रित कर भोजन कराती है। जो परदेश से आई हुई होती है व उसे तिलक लगा कर माला पहनाती है और उसकी मन पसन्द मिठाई मंगवा कर खिलाती है। एवं श्री फल व कुछ नगद भेट स्वरूप देती है।

आजकल तो सभी मिठाई मँगवाकर वर या कन्या की मनुहार करते हैं। अपने रिवाज अनुसार बुआ, बहन आजंली भरती है जिसमें मेवा व मिठाई होती है।

मेहन्दी

मेहन्दी मांडने से पहले बहन, बुआ कोई भी एक दुल्हा या दुल्हन व बिन्दायक के तिलक लगाती है माला पहनाकर पान खिलाती है। शादी के एक दिन पहले चार सुहागन महिलाऐं वर या कन्या को मेहन्दी लगाती है। फिर उन्हें नेग दिया जाता है। घर

की सभी महिलाऐं मेहन्दी लगाती है। यह रस्म शादी के दो दिन पहले ही शुरु हो जाती है। वर या कन्या की मां के हाथ माण्डे जाते हैं। जिनमें एक हाथ पर घाट और एक पर पीला माण्डते हैं। मेंहन्दी अन्य डिजाईन में भी माण्ड सकते हैं। मेंहन्दी लगाने वाली को नेग दिया जाता है। बना बनी व मेंहदी के गीत भी गाये जाते हैं।

मायरा

मायरे में भाई अपनी बहन के लिए चुनरी व पीला, जीजाजी के लिए कपडे और वर या कन्या के लिए कपडे व जूते लाते हैं। किंतु कन्या के लिए लाल या गुलाबी फेरे की साड़ी, पायल, बिछिया, मांग-टीका व चूड़ा कांकड लाते हैं।

अपनी शक्ति के अनुसार भाई बहन के ससुराल वालों के लिए भी भेंट स्वरुप कपडे या बर्तन लेकर आता है। इस समय दोनों पक्ष वाले मायरे के गीत गाते हैं।

भात भरने की विधि

पहले बहन अपने छोटे जवाई से तिलक लगाना शुरु कर अपने सभी भतीजी जंवाईयों को तिलक लगाकर भेट स्वरूप रूपये देती है फिर बहन भाई व भतीजों के तिलक लगाकर भेंट देती है। फिर पीहर पक्ष वाले अपने जवाईयों को तिलक लगाकर भेंट देते हैं। फिर बहन की ससुराल वाले को और अन्त में बहन, जीजाजी व दुल्हा या दुल्हन को भेंट देते हैं।

आखिर में बहन अपने भाई को चरी देती है जिसमें बताशे होते हैं जो लाल कपडे से बंधी होती है। गुड की भेली व चावल एक थाली में रख कर देते हैं। इसके बाद भाभी आरती करती हैं और बहन पक्ष वाले थाली में रुपये डालते हैं। बहन अपने से बड़ों के पैर छूती है और पीहर पक्ष वालों को मिठाई खिलाती है।

पीठी लगाना

जौ का आटा, पिसी हल्दी, मलाई, तेल या घी को दूध या पानी से उसन पर पीठी बना लेते हैं। घर की बेटियां बहनें, बुआ, भाभी वगैरह पीठी लगाती है और मंगल गीत गाती है। पीठी चढ़ने के बाद वर या कन्या का घर से निकलना मना हो जाता है।

तेल चढ़ाना

सामग्रीः- तेल, हरी दोब(हरी घास), आटा के गुणा, चार चूडी, चार दौने।

चार सुहागन महिलाऐं विवाह के दिन सुबह वर या कन्या को चौकी पर बिठाकर तेल में दोब डुबां कर तेल लगाती है उन्हें भी नेग देते हैं। यह क्रिया पैर से शुरु होती है। पहले पैर पर, फिर घुटने पर, फिर कंधे पर, फिर सर पर, तेल चढ़ाती है इस

तरह हर महिला तीन-तीन बार यह क्रिया करती है और एक दौना जिसमें चूड़ी, आटे का गुणा रखा है पीछे खड़ी नायन को पकड़ा देती है।

इसी रिवाज के दूसरे दौर में विवाह के लिए तैयार होने से पहले यही महिलाऐं उल्टी क्रिया करती है यानि पहले सिर, कन्धा, घुटना और पांव पर तेल लगा कर तेल उतार देती है।

अटाल

सामग्रीः- बेसन, दही, बेलन।

दही और बेसन घोल किया जाता है। घर की कुँवारी कन्या उस घोल में बेसन की डंडी डुबा कर वर या कन्या के हाथ में देती है। वर या कन्या का हाथ उसके सर पर होता है। इसके पश्चात् पीठी से नहाकर वर या कन्या तैयार हो जाते हैं। फेरो से पहले मामा नहाने के स्थान से पाटे से गोदी में लेकर उतारता है मामा को नेग दिया जाता है।

बिंदायक

नहाने के बाद वर या कन्या व बिंदायक को महिलायें गीत गाती हुयी बैंड बाजे के साथ मंदिरजी में ले जाती है साथ में एक थाली में कंकण डोरा, रोली, मोली, लड्डू सवा रूपया, बताशे, चावल व श्रीफल होता है जिसे थालोडी कहते हैं घर की बड़ी महिला ले कर जाती है जिसे नेग दिया जाता है। मंदिर जी में प्रवेश कर सात कुंडलिया बनाते हैं। इन पर लड्डू बताशा व सवा रूपया रखते हैं। वर और कन्या तथा बिंदायक इन को उघांलकर दर्शन करने जाते हैं। यहां सवासनी तिलक लगाकर डोरा बांधती है व आरती करती है। उसे नेग दिया जाता है। वापसी में घर आकर दरवाजे पर सवासनी कलश लेकर खडी रहती है जिसमें वर रूपये डालते हैं और वर या कन्या की नजर उतरवाते हैं। घर में वर और कन्या को बिठाकर मुँह मीठा करवाते हैं।

अलुफा (सामेला तथा सिवाला, तोरण)

बारात की शोभा यात्रा निकालने के बाद लड़की वाले के घर के नजदीक पहुंचने पर सड़क किनारे बिछायत कर दी जाती थी तथा वहीं पर मुंग, मोठ, पेठा, जुबाली, पापड तथा कलश पट्टी लाकर लड़की पक्ष के लोग पंचों के साथ-साथ में स्त्रियां भी गालियां गाती हुई आकर बारातियों के बीच में बैठती तथा लड़की की बहन या भुआ बीन्द के बहनोई या फूफा को लेहरीया बंधाती थीं।

फेरों में वेदी की रचना

यह वह स्थान है जहां वर व वधु देव, शास्त्र और गुरु के समक्ष अग्नि के फेरे लगाकर एक दूसरे के सुख दुःख के साथी बन जाते हैं। यह पवित्र स्थान होता है। यहां भगवान की पूजा की जाती है।

स्तम्भ रोपण (थाम)

यह स्तम्भ कुँवारी कन्या के हाथों से रोपा जाता है। स्तम्भ रोपण से पहले नव देवता की पूजा की जाती है। कन्या के तिलक कर मोली बांधी जाती है और चँवरी के दक्षिण-पश्चिम कोने में यह स्तम्भ रोपण होता है। स्तम्भ रोपण से पहले उस खड्डे में गर्भवती स्त्री के हाथों से मूंग, हल्दी की गांठ डलवाई जाती है फिर स्तम्भ रोपण कर देते हैं। इसी स्तम्भ पर 8 सराइयों के बीच में छेद कर के मोली में इस तरह पिरोते हैं कि एक सराई दूसरी का ढक्कन बन जाती है उसके ऊपर लाल कपड़ा बांध दिया जाता है और स्तम्भ पर लटका देते हैं।

चँवरी

वह स्थान जहाँ फेरे होने हैं वेदी के थोडी दूर चारों कोने में थाम खड़े कर ऊपर चँदवा तान देते हैं। इसकी सजावट फूलों से भी की जाती है।

तोरण

जैन मतानुसार कहीं भी शास्त्रों में तोरण मारने की प्रथा का उल्लेख नहीं मिलता है। तीर्थंकरों, चक्रवर्तियों, रामचन्द्रजी व पाण्डवों के विवाह में वरमाला का उल्लेख तो मिलता है किन्तु तोरण का नहीं। माना जाता है कि यह प्रथा मुगल काल से शुरु हुई जब मुगल राजा हिन्दुओं की बेटियों को द्वारपाल की हत्या कर के अपहरण कर ले जाते थे। यही प्रथा धीरे-धीरे रिवाज बन गई। हम जैन धर्मावलंबियों के लिए यह प्रथा दोष पूर्ण है। तोरण पर बनी चिडिया को जब दुल्हा चटिये से मारता है तो वह संकल्पी हिंसा होती है। मुख्य द्वार की सजावट को तोरण द्वार कहा जाता है।

मुख्य द्वार पर जब दुल्हा व उसके परिवार वाले आते हैं तो उन्हें आदर व स्वागत सत्कार सहित अनुग्रह करके प्रवेश करवाएं। कन्या की मां व पिता बारात में आये वर के पिता व माता से गले मिलते हैं उन्हें अन्दर पधारने का आग्रह करते हैं।

बारात स्वागत

जब बारात कन्या के पिता के द्वार पर आती है तो कन्या की मां कलश सिर पर रखकर दुल्हे के सामने जाती है। दूल्हा उसमें सिक्के डालता है। मां आरती करके लवासना लेती है। यह स्वागत परिचय की परम्परा हैं।

स्वागत का सामान

थाली में पाँच दीपक आटे में बनाकर घी के जलाकर, रोली, चावल, मोली, लाल साड़ी या कपड़ा तिकोना करके कलश, हरी नीम डालकर व एक बर्तन में चने की दाल घोड़ी के लिए रखें।

वरमाला

वैसे तो द्वार पर ही वरमाला पहनाई जाती है। किन्तु आजकल स्टेज पर वरमाला पहनाने का प्रचलन है। सर्व प्रथम कन्या वर को वरमाला पहनाती है जिसका अर्थ है कि वह उस वर को अपनी गृहस्थ-जीवन यात्रा के लिए साथी चुन रही है तथा उसका स्वागत कर रही है। फिर वर अपनी दुल्हन को वरमाला पहना कर स्वीकृति देता है।

प्रीतिभोज

दूल्हे के साथ आये सभी सम्बन्धियों व इष्ट मित्रों तथा कन्या पक्ष के कुटुम्बियों व मित्रों को सामूहिक भोज दिया जाता है जो आपसी मधुर व्यवहार के लिए होता है।

फेरे

सामग्रीः- मंदिर जी सेः- 1 सिंहासन, 1 छत्र, 1 चंदवा, पलासना, 1 वेदी, 2 चौकी, 2 छोटे पाटे, 1 शास्त्र, 2 थाली, ठोना प्यालिया, धुली पूजन सामग्री, 8 छोटे कलश, केसर की प्याली, हवन कुण्ड, कलश, लकडी के चम्मच, आसन आदि।

हवन सामग्रीः- 100 ग्राम लाल चन्दन, 100 ग्राम सफेद चन्दन, 300 ग्राम धूप लकडी, आम, आकड, बड व पीपल की लकडी, 250 ग्राम धूप, कपूर, 50 ग्राम घी, माचिस।

अन्य सामग्रीः- 1 थाल, मिट्टी का कलश, 5 दीपक, 4.50 मी. लाल कपड़ा, 11 कलदार रुपया, 11 चवन्नी, पिसी मेहन्दी, 100 ग्राम साबुत हल्दी, 100 ग्राम सुपारी साबुत, 50 ग्राम पीली सरसों, 50 ग्राम मूंग, अगरबत्ती पैकिट 500 ग्राम घी, 2 गजरे, गठजोड़ा, जुबाली, चाँदी का रुपया, 1 तनी सेवरे।

फेरे में दुल्हन मामा के यहां से आए कपड़े व जेवर पहन कर बैठती है। पंडित विधिवत् फेरे करवाते हैं। वर-वधू आपस में एक दूसरे से वचन लेते हैं। धर्म, अर्थ, काम में एक दूसरे का साथ देने का संकल्प लेते हैं। पण्डित जी मामा से भी वचन दिलवाते हैं कि अब हम कन्या को जवाई के सुपुर्द कर रहे हैं। पिताजी कन्या का पाणिग्रहण संस्कार करते है।

यह संस्कार करुणा दान कहलाता है अर्थात् जिसे दूसरे को समर्पित कर दिया उस पर अब कोई अधिकार नहीं रह जाता है। विवाह के पश्चात् कन्या का गोत्र भी

बदल जाता है। वर के गृहस्थी को सुचारु रूप से चलाने तथा धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष मार्ग की पूर्ति हेतु कन्या को समर्पित कर दिया जाता है।

सवासनी द्वारा गठजोड़ा बांधा जाता है। कन्या की भाभी हथलेवा जुडाती है। फेरे के पश्चात् भाई हथलेवा छुडाता है और नेग देता है। कन्या की मां आरती करती है।

कन्या के ससुराल से चुनरी, जुआली व चूडा आता है। जो सात फेरों के बाद दुल्हान को पहना दिया जाता है। चूडा दुल्हन की नन्द द्वारा पहनाया जाता है एवं चूडे के राखी बांधी जाती है फलस्वरुप ननद को नेक दिया जाता है।

कंवर कलेवा

फेरों के दूसरे रोज सुबह वर तथा उससे छोटे भाई, बहिन, जवाई आदि को बुलाकर कलेवा कराया जाता है। उस समय घर की औरतें दूल्हें के मुंह में ग्रास देती हैं तथा बदले में रुपया या जेवर उसके हाथ में देती है।

सोलावना (ध्वजा या मंदिर जी का दस्तूर)

फेरों के सुबह बाराती बीन्द को लेकर मंदिर जाते हैं तथा लड़की पक्ष वाले भी अपने गाँव के पंचों को लेकर जाते हैं मंदिरजी के लिए दान निकालते है।

दूधापाती तथा जुआ-जुई

फेरों के बाद उसी मण्डप के नीचे लड़के और लड़की को बैठाकर औरतें दोनों के हाथ की ताकत का जायजा लेती है तथा कई प्रकार के खेल करवाती थी हाथ में बंधे हुये रक्षा सूत्र को एक दूसरे से खुलवा कर बीन्द का बीन्दनी को और बीन्दनी का बीन्द को बंधवा दिया जाता है। इस प्रथा को जुआ-जुई कहते हैं। शाम को भोजनोपरान्त बीन्द को उच्चासन पर बैठा कर औरतें नाना प्रकार के स्वर लहरी के गीत बीन्द को सुनाती थी तथा लड़की माँ दूध पिलाती थी तथा रुपये इत्यादि भेंट दिये जाते थे। इस प्रथा को दूधावाती कहते हैं।

तणी खुलाई

जिस मंडप में वैवाहिक कार्यक्रम सम्पन्न होते है उस मंडप को बीन्द के हाथ में रुपया नारियल देकर खुलवा दिया जाता है।

बढ़ार (सज्जन गोठ, मिजवाणी)

विवाहोपलक्ष्य में जो भोजन व्यवस्थित रूप से सब बारातियों के साथ बीन्द, अभिभावक करते हैं, उसे बढ़ार कहा जाता है। इस समय लड़की पक्ष वाला सारे बारातियों को जिमनी के रुपये देता है। पूर्व भारत में इस प्रथा के

अनुसार चौक में बैठने वाले सज्जनों को ही एक रुपये के हिसाब से जिमनी दी जाती है।

पहरावणी

बारातियों की लड़की पक्ष वाला नकद रुपये, कपड़े, बर्तन इत्यादि सामानों से सत्कार कर विदा करता है। इस प्रथा को पहरावणी कहते हैं। इसमें बारातियों के साथ गाँव के लोग हंसी मजाक भी करते है। पुराने समय में बारातियों के पहरावनी हो जाने के बाद लड़की की माँ लड़के के पिता को स्त्रियों के कपड़े पहनाती और उसके काजल टीकी लगा कर आईना दिखाती थी और उस समय बहुत बेहूदा हँसी-मजाक होता था। अब यह रिवाज पुरुषों ने करना शुरू कर दिया है।

विदा (बींद जुहारी)

लड़की को ब्याह के बाद आखिरी विदा देने की रिवाज को जुहारी कहते हैं। लड़की पक्ष का सारा परिवार एक रुपया नारियल तथा बीन्द को तिलक लगा कर देते हैं।

लेण (बहिन-बेटियों को टका बांटना)

सारे कार्यक्रमों के बाद लड़के का पिता अपने गोत्र की लड़कियों, भांजियों तथा अपने गाँव की किसी जाति की लड़की जो गाँव में ब्याही हुई हो तो उन लोगों को कपड़ा, मिठाई, बर्तन, नकद रुपये देकर आता है।

विदाई

मंगल कलश और दुल्हन के साथ दूल्हे को विदा करते हैं। एक बार उन्हें मुँह जुठा कर तिलक लगाकर विदा कर दिया जाता है। उसी समय दुल्हन का मामा जुवाली का गोला आधा काट देता है।

मसेड़े

विवाह के दूसरे दिन दुल्हन व दुल्हे को कन्या के पिता के घर भोजन हेतु बुलाया जाता है। जिसमें वर के मित्र, भाई, बहनें भी आते हैं। फिर कन्या को भेंट दिया हुआ सामान देकर विदा कर दिया जाता है घर के और दूसरे जंवाईयों को क्रमानुसार तिलक लगा कर विदा दे देते हैं।

इस समय दुल्हे की साली अपने जीजाजी के जूते छुपाती है और नेग लेकर जूते वापस करती है। यह जीजा साली की छेडछाड होती है।

वर पक्ष के रीति-रिवाज

तेल बान, बिंदोरा, महेन्दी, भात सभी वधु पक्ष की तरह ही किये जाते हैं।

घोड़ी पूजन

घोडी के मेहन्दी लगाकर उसको लूगडी (ओढ़नी) उढ़ायी जाती है फिर उसको चने की दाल चराई जाती है। दाल चराई का बर्तन बहन बेटी को देते हैं। घोड़ी के चार खुरों का नेग स्वरूप कुछ भी बहन बेटी को ही देते हैं। घोड़ी पर कुँवारी कन्या बैठकर मूँग बखेरती है। दूल्हें को घोड़ी पर बैठाकर उसी माँ उसे दूध पिलाने का नेग करती है और भाभी या चाची काजल डालती है। जवाई को लाल रंग के कपड़े की रुपयों से भरी थैली पकडाई जाती है। साथ ही जंवाई घोड़ी की लगाम पकडता जिसका उन्हें नेग दिया जाता है।

निकासी

वर को जवाई द्वारा शेरवानी, साफा पहनाने का नेग वर के माता-पिता शक्ति अनुसार दिया जाता है। बहन बेटी आरती उतारती है उसका भी नेग दिया जाता है। इसके बाद बहन लूण राई करती है। वर मार्ग में देवदर्शन करता हुआ विवाह स्थल के लिए रवाना होता है। वर के साथ में सभी संगे संबंधी, मित्र आदि बाराती बन कर जाते हैं वर के माता पिता आखोत ले जाते हैं जिसमें ढाई बेंस, फूलमाला, पान, नारियल, चावल, 4 चांदी की डिब्बी मेहन्दी के सूखे पत्ते मोली के गोले, चूडा, जुआली, गठजोड़ा, सेवरे, मेवा एवं मिठाई आदि ले जाते हैं।

नोटः- यदि बारात बाहर की हो तो बारातियों को शक्ति अनुसार कुछ उपहार भेंट करते हैं जिसे पेहरवानी कहते हैं। इसमें पेहरवानी के पहले वर पक्ष की तरफ से कन्या पक्ष के मंदिर में कुछ भी सार्मथ्यानुसार उपहार भेंट किया जाता है। उसे सोलाना कहते हैं।

टूट्या

यदि बारात बाहर की होती है तो बारात विदा होने के बाद सब महिलायें मिलकर अपना समय व्यतीत करने व मनोरंजन करने के लिए टूट्या करती है। जिसमें बहन दूल्हा व भाभी दुल्हन बनकर आपस में हंसी मजाक करती है।

दुल्हा दुल्हन का गृह प्रवेश

जब इनकी गाड़ी घर के द्वार पर पहुँचती है तो दुल्हन के पल्ले से नथ लगाते हैं। गाडी से माता पिता बडे उत्साह से उन्हें उतारते हैं। दुल्हन साथ में कलश लाती है। जिसमे सवा रुपया व नीम की डाली होती है। द्वार पर बहन भुआ कलश लिये

खड़ी रहती है उसमें शक्तिअनुसार वर कुछ भेंट डाल देता है फिर बहन को बाड़ रुकाई का नेग दिया जाता है।

दुल्हन जहाँ बैठती है वहाँ मांडना मांडते हैं व सात गोले करते हैं। उन पर छः थाली व एक कांसी का कटोरा रखते हैं। दुल्हा उन्हें चाकू या तलवार से बांये दांये खिसकाता है। दुल्हन उन सबको धीरे-धीरे एक जगह कर देती है। भगवान की फोटो के सामने दोनों बैठकर नमोस्तु करते हैं। बहन आरती करती है बदले में नेग देते हैं। दूल्हन का मीठा मुँह करवाते हैं वह मेवे से गोद भरकर पीहर भेजते है। दुल्हन घर की लक्ष्मी, वधु व गृहस्वामिनी बन कर आती है। घर की खुशहाली उसी पर निर्भर करती है। अतः दुल्हन का प्रवेश मंगल बेला में ही होना चाहिए। शास्त्रानुसार रात्री में राक्षसी प्रवृतियों क्रियाशील हो जाती है अतः प्रातः काल या गोधूली बेला में वधु का प्रवेश करवाना चाहिए।

सुहागथाल

सुहागथाल में एक थाल चावल भात, पुडी, मिठाई दोनो तरह की रसोई बनाकर परोसा जाता है उसमें दुल्हन, कुँवारी कन्या व 6 सुहागिने साथ बैठती है। बहू को सभी सुहागिने बडे प्यार से मुँह में एक-एक ग्रास खिलाती है और दुल्हन बाद में उस थाली में नेग स्वरूप कुछ रुपया डालती है।

इसके बाद दुल्हे दुल्हन को सभी औरतें मिलकर मंगलगीत गाती हुई मंदिर में ले जाती है। वहां दोनों को बैठाते है। वहां गठजोडा, साफा सेवरा, जुआली सब उतार कर थाली में रख देते हैं। तथा दुल्हा दुल्हन दोनों एक दूसरे के डोरडे एक हाथ से खोलते हैं।

घर आकर दुल्हा दुल्हन सभी को ढोक दे आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। बहू की मुँह दिखाई की जाती है। तथा ससुर जी रुपये थैली में भरकर उसमें बहू का हाथ डलवाते हैं और मुट्ठी भर कर जितने वह बाहर निकाल ले उतने उसे ही भेंट स्वरूप देते हैं। यह सब खुशी का माहौल होता है। दो दिन पश्चात् बहू का भाई लेने आता है तब उसे कपडे आदि भेट दी जाती है व बहू को पीहर भेज दिया जाता है।

यही से शुरू होती है एक सच्चे श्रावक की जीवन यात्रा।

जन्मोत्सव

विवाह के पश्चात स्त्री के जीवन का महत्वपूर्ण समय होता है जब वह गर्भ धारण करती है। बाल सुलभ किलकारियों सुनने की आशा से ही घर में चारों और हर्ष का वातावरण बन जाता है।

आठवां

गर्भावस्था के दौरान सातवें या आठवें मास में आठवां पूजन करते हैं। गर्भवती महिला के पहले दिन हाथों मे मेहन्दी लगाई जाती है। अलग-अलग रिवाजों के अनुसार कई स्थानों पर घाट आठवें में ही ओढते हैं और बच्चों के आगमन की खुशियां मनाते हैं घाट ओढ़कर मन्दिर जाते हैं, फिर जच्चा के लाड-चाव करते हैं यह परम्पराऐं अपने-अपने देश व शहर के अनुसार होती है।

घर परिवार की महिलाऐं एकत्र होती है। सब साथ बैठकर खाना खाते हैं और गर्भवती स्त्री को अपने हाथ से खिलाते हैं उसकी मनवार करते हैं बाद में सभी मंगल गीत गाते हैं।

बच्चे का जन्म

बच्चे का जन्म होने के पश्चात् उसे नहला कर कपडे पहना देते हैं। थोड़ी देर बाद बच्चे को गुड-अजवाइन का पानी बनाकर (दोनों चीजों को उबाल कर छान लेते हैं।) निवाया-निवाया बच्चें को थोड़ा-थोड़ा देते हैं। इसे जन्म घुट्टी कहते हैं। घर का बुजुर्ग व्यक्ति जो संस्कारित हो, जिसका स्वभाव अच्छा हो या जो श्रेष्ठ हो सर्वप्रथम वही बच्चे के मुख में यह घुट्टी देता है। ऐसी मान्यता है कि जो घुट्टी बच्चे को देता है उसके व्यक्तित्व का प्रभाव उस पर पडता है। जन्म के तीन घन्टे पश्चात् बालक मां का दुग्धपान करता है।

लड़के के जन्म पर कांसी का थाल बेलन से बजाते हैं। ताकि पुत्र जन्म की सूचना सभी को मिल जाए। यह थाल दादी बजाती हैं। कहीं-कहीं बहन बेटियां बजाती है और नेग प्राप्त करती है। पुत्र होने पर घर के जवांई से आंवल गड़ाई का दस्तूर करवाया जाता है। पुत्र जन्मोत्सव पर गीत गाये जाते हैं कारण लडके से वंश की बढोतरी होती है।

न्हावन

बच्चे के जन्म के दस दिन पश्चात अच्छा वार व तिथि देख कर न्हावन किया जाता है। जो शुद्धि का रूप है न्हावन के पश्चात् परिवार के अन्य सदस्य देव दर्शन, पूजन व स्वाध्याय करने योग्य हो जाते हैं। एक दिन पहले जच्चा के मेहन्दी के नाखुन लगाते हैं। बच्चे की बुआ बच्चे के लिए हरे या लाल रंग का झबला व बच्चे की मां के लिए हरे रंग का ब्लाऊज लाती है। लडका होने पर साथिए लगाए जाते हैं। बान्दरवाल लगाई जाती है। यह बान्दरवाल घर की नौकरानी या नायन बांधती है उसे नेग देते हैं। जच्चा को पीठी लगा कर नहलाते हैं। जच्चा अपनी ननद द्वारा लाया ब्लाऊज व लाल

व पीले रंग की साडी पहनती है। जिठानी या ननद सिर गूंधती है और नेग लेती है। बच्चे को दाहिनी गोद में लेर जच्चा कमरे से बाहर आती है। एक देवर या जेठूता लोहे के दिवले में रोटी लगाकर जच्चा का पल्ला पकडता है और दूसरा देवर या जेठूता पलंग पर बैठता है। दोनों ही जच्चा से नेग पाते हैं। कमरे के बाहर गद्दी पर बच्चा पूर्व या उत्तर की ओर मुँह करके बैठ जाती हैं जच्चा के सामने चोक पूर कर उस पर पाटा रख देते हैं। पाटे पर साथिया बनाकर लड्डू या बताशा तथा सवा रुपये रखते हैं। जच्चा पाटे की फेरी करती है। नन्द आरता करती है जच्चा कमरे में जाते समय दरवाजे के दोनों ओर रोली से साथिया करती है। परिवार व पड़ौस की महिलाएं, पीपली, जच्चा, पालना, झुनझुना आदि गीत गाती है।

सूर्यास्त से पूर्व सूर्य को रोली व जल का जच्चा छीटा देती है। क्योंकि उसमें अकृत्रिम चैत्यालय की स्थापना मानी गयी है। इस दिन मोठ, कसार, चावल, पुड़ी, सब्जी आदि बनाते हैं। जब जच्चा खाना खाती है तो जिठानी खाना परोसती है जिसे पंच पुरसना कहते हैं और नेग लेती है।

चूडा पहनाना

अशुद्धि के कारण जच्चा का पुराना चूडा बदल कर इसी दिन नया चूडा पहनाते हैं लाल रंग का हरे रंग का हरे बन्द का चूडा पहनाया जाता है चूडे को मांगलिक माना जाता है। ननद राखी बांधती है मंगल गीत गाये जाते हैं।

जच्चा का मंदिर जाना

बच्चे के जन्म पर चालीस दिन बाद जच्चा-बच्चा को नहला कर देव दर्शन हेतु ले जाते हैं। पहले दिन जच्चा को मेहन्दी लगाई जाती है। जच्चा अपनी गोद में बच्चे को लेकर मंदिर जाती है। परिवार व आस पड़ौस के सदस्य उसके साथ होते हैं। मंदिर जाते समय चावल, लौंग, बादाम, गोला या श्रीफल व सवा रुपया लेकर जाते हैं। मंदिर के बाहर दरवाजे पर दोनो तरफ साथिया करते हैं। मंदिर के अन्दर प्रवेश करने पर जमीन पर सात गोलियां बनाते हैं सब में बताशा या बादाम रखते हैं और बीच वाले में लड्डू व सवा रुपया रखते हैं। जच्चा उन गोलियों को बाऐं पैर से उंगाल कर देव दर्शन करती है। श्री जी के सन्मुख लाल या पीला कपड़ा बेदी पर बिछाकर बच्चे को सुला देते हैं। उसके कान में बुजुर्ग व्यक्ति नौ बार णमोकार मंत्र बोलते हैं। ''ओं नमोऽर्हते भगवते जिन भास्कराय जिनेन्द्र प्रतिमा दर्शने अस्य बालकस्य दीर्घायुष्यं आत्म दर्शनं च भूयात।'' यह मंत्र बालक को जिनालय में दर्शन कराते समय बोलें। तथा जब तक बालक 8 वर्ष का हो तब तक के लिए उसे धर्म के अनुसार मद्य-मांस-मधु आदि

का त्याग करवाते हैं क्योंकि शास्त्रानुसार आठ वर्ष तक बालक माता-पिता पर निर्भर होता है मंदिर में शक्ति अनुसार दान भी करते हैं।

नवजात शिशु को जैन बनाने की विधि

श्री मंदिर जी में एक रंगीन वस्त्र पर सुन्दर स्वस्तिक बनायें। उस वस्त्र पर बालक को पूर्वाभिमुख या उत्तरभिमुख सुला दें। फिर किसी विद्वान के द्वारा उसके भाल स्थान पर तिलक करा दें। फिर उसे दायें कान में नौ बार नमोकार मंत्र सुना दें। फिर बाऐं कान में नौ बार नमोकार मंत्र सुना दें। पीछे चत्तारि मंगलं आदि दण्डक सुना दें, फिर उससे कहें कि हे चिरंजीव आज से तुम श्री जिनेन्द्र देव के समक्ष जैन धर्म के उपासक बन गये हो ऐसा कहकर उसके शरीर पर गन्धोदक की हल्की सी वर्षा कर दें। फिर एक जटावाला सूखा सुन्दर नारियल उससे चढवा देवें। माता-पिता अपनी शक्ति के अनुसार बालक को जैन बनाने की खुशी में श्री मंदिरजी में दान देवें। पूजा के बर्त्तन, शास्त्र आदि देवें।

तिलक मंत्रः (ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः) तब भाल स्थल्ने सर्व सुखशान्त्यर्थ तिलक करोमि। दीर्घायुर्भव ऐसा आर्शीवाद देवें।

घाट ओढ़ना

बच्चे के जन्म के पश्चात् सुहागन स्त्रियां घाट ओढने ही हकदार हो जाती है। घाट सौभाग्य का सूचक है। यह लाल रंग का होता है जिस पर सुन्दर बंधेज होता है। यह सादा भी ओढा जाता है। किन्तु जिनकी सामर्थ्य होती है वे भारी कामदार घाट भी बनवाते हैं। यह घाट जच्चा के पीहर से आता है। इस अवसर पर निम्न सामग्री पीहर पक्ष की ओर से आती हैः-

1. जच्चा की घाट की साड़ी, ब्लाऊज(सफेद) पेटिकोट, रुमाल, चूडा, मेहन्दी, बिन्दी।
2. शक्ति अनुसार सूखा मेवा-बादाम, छुआरा, मखाना, काजू, किशमिश व नारियल आदि।
3. लड्डू (सामर्थ्य के अनुसार)
4. बच्चे के कपड़े।
5. बच्चे के खिलौने।
6. बच्चे के गद्दी, पोतडे।
7. जच्चा की पीले की साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट, रुमाल, जच्चा के श्रृंगार का सामान।

8. जच्चा के लिए कढाई, कोंचा व अन्य बर्तन/ कम से कम 11 बर्तन (जवाई को पांचो कपड़े सास व ससुर को व अन्य परिवार के सदस्यों को शक्ति अनुसार दे भी सकते हैं और नहीं भी देते हैं।)

दूसरे दिन भाई या भतीजा लेने आता है जच्चा पीला पहन कर पीहर जाती है तथा जंवाई भी जाता है/यदि शक्ति हो तो साथ में घर के छोटे बच्चों को भी बुलाया जाता है। तब जच्चा पेडा या बरफी का थाल लेकर जाती है जिसका लावणा निकलता है। पीहर की नायण को नेग देते हैं। घाट की विदा देते हैं।

गृह प्रवेश (नांगल)

गृह प्रवेश के पहले दिन प्रवेश करने वाली महिला मेहन्दी लगाती है। गृह प्रवेश के लिए व्यवस्था-तोरण, आम का पत्ता की बांदरवाल बाँधना, लाल फीता मुख्य द्वार पर बांधना, फीता कांटने के लिए कैंची, लिस्ट अनुसार पूजन सामग्री, पूजन करवाने को पंडितजी, अतिथियों के लिए नाश्ता-पानी एवं उनको देने के लिये गिरी गोला या अन्य कोई वस्तु अपनी शक्ति अनुसार, घर पर लगाने को फूल माला, पुष्प वृष्टि के लिये पुष्प गृह प्रवेश करने वालों को पहिनाने के लिए फूल माला, हरी सब्जी, चावल, गुड़, चौक का सामान एवं खाने का सामान। गृह प्रवेश मुहूर्त के पूर्व जिन मंदिर जाकर देव दर्शन करते हैं। वहाँ से गृह प्रवेश करने वाले पति-पत्नि गठजोड़ (गठजोड़ में सवा रुपया, मूंग, बादाम रखते हैं) करके प्रस्थान करते हैं। पुरुष के हाथ में जिनवाणी होती है। महिला के हाथ में कलश होता है। कलश में पानी सवा रुपया, बादाम, मूंग डालकर लाल कपड़ा से मुँह बांध देते हैं। गीत गाते हैं-पहला रिखबनाथ बंदस्या, दूजा अजितनाथ देव, जीत नगारा नेम को...। प्रवेश मुहूर्त के अनुसार घर के द्वार पर पहुँचते हैं। पहले पहुँच जाने पर द्वार पर खड़े होकर णमोकार मंत्र बोलते रहना चाहिये। पुष्प-वृष्टि करते हैं। फीता काटते हैं। द्वार पर तोरण लगाते हैं। बहिन-भुआ बाड़ रूकाई करती है, उन्हे शक्ति अनुसार नेक दिया जाता है। बहिन-भुआ कलश लिये खड़ी होती है। उसमें सवा रुपया डालकर प्रवेश करते हैं। पुरुष पहले दाहिना पांव और स्त्री बांया पांव बढाते हैं। लूण राई करते हैं। आरती करते हैं, उसमे नेग दिया जाता है। प्रथम सीधे ही चौका में प्रवेश करते हैं। जिनवाणी तथा कलश को चौका में रख देते हैं। चौका में पंडितजी पूजन करवाते है। चौका में गुड़ और हरी सब्जी रखते हैं। चौका से बाहार आकर निज कमरे में प्रवेश करके पूर्व दिशा में मुँह करके णमोकार मंत्र का जाप करते हैं।

यह नेगचार होने के बाद चौका में जाकर चूल्हा इस तरह से रखते हैं कि उसका मुँह पूर्व या उत्तर दिशा में रहे। चूल्हा के तिलक करके मोली बांधते हैं। सर्वप्रथम गुड़ का मीठा भात एवं हरी सब्जी बनाते हैं या कई स्थानों पर बाटी, दाल भी बनाते हैं तथा घर वाले प्रथम वही भोजन करते हैं। अन्य व्यक्तियों, अतिथियों के लिए अन्य किसी भी प्रकार के व्यंजन बनते हैं। नेग देने लेने अपनी शक्ति अनुसार करते हैं।

मरण

शव पर ओढ़ना ओढ़ाना– स्त्री की मृत्यु होने पर उसके शरीर पर ओढ़ना ओढ़ाकर ले जाने का चलन है।

तीया– मृत्यु के तीसरे दिन घर के मर्द और औरतें घर के बाहर किसी स्थान या मन्दिरजी में बैठते हैं। समाज के मर्द और औरतें घर पर आकर इकट्ठे हो जाते हैं बिछायत होती है और सबके इकट्ठे हो जाने के बाद मंदिर जाया जाता है। मन्दिर से आकर घर के सामने दूसरे व्यक्ति के घर वालों से विदा लेते हैं। व्यापारी वर्ग के यहां मंदिर से लौटने पर घर के मालिक से चाभी लेकर पंच लोग दूकान इत्यादि खुलवा देते हैं।

बारहवां घड़िया– बारहवें के रोज शान्ती विधान की परम्परा चल गई है। साथ में पूजन सामग्री तथा कोई उपकरण मृत्यु प्राप्त व्यक्ति की यादगारी में चढ़ावा जाता है यथाशक्ति नगद भी मंदिरजी में चढ़ाते हैं। संस्थाओं के लिए भी दान निकाला जाता है तथा अपने पराये को भी ओर गांव की पंचायती में भी यादगारी के बर्तन बांटे जाते है।

तेरहवां, मौसर नुकता तथा पगड़ी का दस्तूर – स्त्री की मृत्यु होने पर परिवार के लोगों के अलावा गांव के पंचों को भोजन कराया जाता है। मर्द की मृत्यु होने पर उनके लड़कों को ननिहाल तथा सुसराल की पगडी बंधाई जाती है। ननिहाल की एक ही पगडी होती है जो ज्येष्ठ लडके को बंधाई जाती है। बाकी लड़कों को अपने-अपने सुसराल की पगड़ी बांधते है न्योते का रुपये लिया जाता है। इस अवसर पर गाँव के पंच भी न्यौता का रुपये देते हैं। तथा सारे सामान तथा परिवार का भोजन होता है। बहन बेटियाँ तथा भोजियों को यथाशक्ति कपड़ा नकदी तथा जेवर दिया जाता है।

संक्षिप्त सूतक-पातक - अवधि - विचार

सूतक में देव-शास्त्र-गुरु का पूजन-प्रक्षालादिक तथा मंदिरजी की जाजम-वस्त्रादि को स्पर्श नहीं करना चाहिये। सूतक का समय पूर्ण हुए बाद पूजानादि, सत्पात्र-दानादि करना चाहिये।

1. जन्म का सूतक दस दिन तक माना जाता है।
2. यदि स्त्री का गर्भपात (पाँचवे-छठे महीने में) हो, तो जितने महीने के गर्भ का पात हो, उतने दिन का सूतक माना जाता है।
3. प्रसूता-स्त्री को 45 दिन का सूतक होता है, कहीं-कहीं 40 दिन का भी माना जाता है। प्रसूतिस्थान एक मास तक अशुद्ध है।
4. रजस्वला-स्त्री को चौथे दिन पति के भोजनादि के लिये शुद्ध होती है, परन्तु देव-पूजन, पात्रदान के लिये पाँचवे दिन शुद्ध होती है। व्यभिचारणी-स्त्री के सदा ही सूतक रहता है।
5. मृत्यु का सूतक तीन पीढ़ी तक 12 दिन का माना जाता है। चौथी पीढ़ी में छह दिन का, पाँचवी-छठी पीढ़ी तक चार दिन का, सातवीं पीढ़ी में तीन दिन, आठवीं पीढ़ी में एक दिन-रात, नवमी पीढ़ी में स्नान-मात्र में शुद्धता हो जाती है।
6. जन्म तथा मृत्यु का सूतक गोत्र के मनुष्य का पाँच दिन का होता है। तीन दिन के बालक की मृत्यु का दस दिन (माता-पिता को), आठ वर्ष के बालक की मृत्यु पर दस दिन परिवार को माना जाता है। इसके आगे बारह दिन का सूतक माना जाता है।
7. अपने कुल के किसी गृहत्यागी का संन्यासमरण या किसी कुटुंबी का संग्राम में मरण हो जाय, तो एक दिन का सूतक माना जाता है।
8. यदि अपने कुल का कोई देशांतर में मरण करे और 10 दिन, के भीतर खबर सुने, तो शेष दिनों का ही सूतक मानना चाहिये। यदि 10 दिन पूर्ण हो गये हों तो स्नान-मात्र सूतक जानों।
9. गौ, भैंस, घोड़ी आदि पशु अपने घर में जने, तो एक दिन का सूतक और घर के बाहर जने, तो सूतक नहीं होता।
10. बच्चा हुए बाद भैंस का दूध 15 दिन तक, गाय का दूध 10 दिन तक, बकरी का 8 दिन तक अभक्ष्य (अशुद्ध) होता है। देश-भेद से सूतक-विधान में कुछ न्यूनाधिक भी होता है, परन्तु शास्त्र की पद्धति मिलाकर ही सूतक मानना चाहिए।